आत्मा बुद्धि से परे

प्रो. (डॉ.) सोहन राज तातेड़,

पूर्व कुलपति सिंघानिया विश्वविद्यालय, राजस्थान

मानव जीवन का सार आत्मा है। आत्मा के द्वारा ही शरीर के सभी तंत्र संचालित होते हैं। आत्मा सूक्ष्म है। बुद्धि उससे स्थूल है। मन के द्वारा बुद्धि सामग्री ग्रहण करती है। बुद्धि का कार्य क्षीर, नीर, विवेक करना है। गलत और सही का निर्णय बुद्धि करती है। बुद्धि चित्त से संचालित है। चित्त भाव से संचालित है। भाव लेश्याओं से संचालित होता है। अच्छा और बुरा भाव पूरे शरीर में मिल जाता है। यदि भाव बुरे होते हैं तो उसका शरीर पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है। यदि भाव अच्छे होते हैं तो शरीर पर उसका अच्छा प्रभाव पड़ता है। आत्मा मूलतः चिदानन्दस्वरूप है। आत्मा शरीर को शक्ति प्रदान करती है।

सभी धर्मों में तप को महत्व दिया गया है। तप के द्वारा तेजस शरीर को प्रकाशित किया जाता है। तेजो लेश्या प्रसन्नता प्रदान करती है। चरित्र औार चिन्तन अच्छा बनता है। ब्राह्य जगत, भीतर का जगत ये दो जगत मानव को संचालित करते हैं। अंतर का जगत आत्मा का जगत है। बाह्य जगत सभी व्यवहारों को चलाता है। संसार में अनेक प्राणी है। सभी की आत्मा भिन्न–भिन्न हैं। इस सम्बन्ध में सभी दर्शनों का अपना अलग–अलग मत है। जैन दर्शन का सिद्धान्त है कि जितने जीव हैं उतनी आत्माएं हैं। आत्मा में मूल रूप से कोई भेद नहीं हैं किन्तु कर्मावरण के कारण आत्मा की शक्ति का प्रकाश सबमें भिन्न–भिन्न हैं। सांख्यदर्शन भी अनेक आत्माओं को मानता है। वेदान्त दर्शन में एक ही आत्मा सभी जीवों में प्रकाशित हो रही है। केवल ज्ञान का अंतर है। आत्मा बुद्धि से परे है। बुद्धि से परे अतीन्द्रिय जगत में सत्य की खोज शुभ विचार होते हैं। भीतरी जगत में आत्मा का प्रकाश प्रकाशित होता है। आत्मा कर्म शरीर को प्रकम्पित करता है। मोक्ष आत्म सुख है। पाप–पुण्य का पलड़ा लटकता रहता है। पाप के द्वारा जीव दुखी होता है और पुण्य के द्वारा प्रसन्नता की प्राप्ति होती है।

सम्पूर्ण सृष्टि आत्मा और कर्म के सम्बन्ध पर चल रही है। जैसे एक कठपुतली को नचाया जाता है, वैसे ही प्रत्येक जीव जीवनभर कर्म के अधीन नाचता रहता है। मन, वचन और

कायारूपी शरीर कर्म से चलता है। कर्म प्रभाव के कारण सुख और दुःख प्राप्त होता है। आत्मा एक चेतन तत्व है। आत्मा सचिदानन्द स्वरूप और अनन्त ज्ञान दर्शन और चरित्र से युक्त है। चेतना अरूपी है। इसे देखा या दिखाया नहीं जा सकता। सम्पूर्ण कर्म आत्मा के साक्षी से किये जाते हैं। आत्मा अजर, अमर, अविनाशी तत्त्व है। आत्मा संवेदन करती हैं। जड़ पदार्थ में संवेदना नहीं होती। आत्मा के बिना कर्म और कर्म के बिना आत्मा टिक नहीं सकता। कर्म जड़ पदार्थ है।

भारतीय दर्शन में कर्मशास्त्र का बड़ा वैज्ञानिक विवेचन किया गया है। किसी दर्शन में अविद्या, किसी में अज्ञान आदि विभिन्न नामों से कर्म का विवेचन किया गया है। कर्म और आत्मा का सम्बन्ध अनादि है। जैन दर्शन के अनुसार आत्मा अनन्त ज्ञान दर्शन और चारित्र युक्त है। आत्मा पर कर्म का आवरण पड़ा रहता है। आत्मा और कर्म को जब अलग–अलग किया जाता है, तब आत्मा अपने मूल स्वरूप में स्थित हो जाता है। पुद्गल चतुःस्पर्शी होता है। कार्मण शरीर आत्मा के अनन्त गुण से जुड़ा है। जब कार्मण शरीर से आत्मा पृथक होता है तब आत्मा ज्ञानदर्शन चारित्र युक्त हो जाता है। तब आत्मा क्रिया नहीं करता। कर्म के सिद्धांतों का अध्ययन इस अन्तर को बिल्कुल स्पष्ट कर देता है। जिस प्रकार आनुवंशिकता जीवन से सम्बन्धित है, उसी प्रकार कर्म जीव से सम्बन्धित है, जिसमें पिछले कई जन्मों के कर्म और प्रतिक्रियाएं कर्म शरीर के रूप में संग्रहीत रहते हैं। इस कारण अलग–अलग व्यक्तियों की योग्यता और उसकी असाधारण प्रतिभा केवल वर्तमान जीवन पर ही आधारित नहीं होती, इसका मूल स्रोत इससे भी परे जीव से बधे हुए संग्रहीत कर्मों अर्थात् कार्मण शरीर में खोजा जा सकता है।

जीव विज्ञान यह विश्वास करता है कि शरीर का महत्वपूर्ण घटक जीन है। यह एक विशिष्ट गुणसूत्र है और अत्यन्त सूक्ष्म है। इसकी सूक्ष्मता मात्र अनुमान से होती है। प्रश्न है हमारी चेतना कहां रहती है? ये क्रोमोजोम्स में मौजूद रहती है या जीन्स में? इसी के कारण मनुष्य–मनुष्य के बीच में इतना अंतर पाया जाता है। व्यक्तियों का स्वयं का प्रयास एक जैसा नहीं होता। प्रत्येक व्यक्ति की चेतना भी एक जैसी नहीं होती। कर्म के सिद्धांत के अनुसार इस असमानता का कारण कर्म है। यदि आज के जीव वैज्ञानिक से ये प्रश्न पूछा जाये तो वह

यह उतर देगा कि इस असामनता का कारण जीन्स है। जीन्स और क्रोमोजोम्स मानव के व्यक्तित्व का निर्धारण करते हैं। उसका स्वभाव और व्यवहार वैसा ही हो जाता है जैसे उसके जीन्स होते हैं। जीन्स ही समस्त असामनता के लिए जिम्मेदार हैं। जीवविज्ञान के अनुसार प्रत्येक जीन्स में साठ लाख आदेश होते हैं।

आत्मा चेतनायुक्त है। आत्मा न तो कर्मों से बंधता है और न मुक्त होता है, ऐसा सांख्य दर्शन का मानना है। आत्मा या पुरुष और प्रकृति ये दो मुख्य तत्व हैं। बुद्धि प्रकृति का परिणाम है। प्रकृति जड़ है अतः बुद्धि भी जड़ तत्व से युक्त है। आत्मा बुद्धि से पृथक है। प्रकृति के जितने परिणाम हैं वे सभी जड़ात्मक हैं। आत्मा या पुरुष चेतन तत्व है।